प्राक्कथन (Introduction)

कथा-साहित्य हिन्दी साहित्य का अभिन्न अंग है। हिंदी का स्वातंत्र्योत्तर कथा-साहित्य बहुत ही महत्वपूर्ण है। हिंदी कथा-साहित्य ने स्वातंत्र्योत्तर परिदृश्य को बड़ी गंभीरता से लिया। बहुत मशक्कतों के पश्चात् देशवासियों को गुलामी की जंजीरों से मुक्ति मिली थी। सपनों का भारत सबके हृदय की कामना थी। कल्पना का पक्षी रंग-बिरंगे पंखों के साथ उड़ान भरने को तैयार खड़ा था। परन्तु जो सपने हमने आजाद भारत को लेकर सजाये थे, उन्हें फलीभूत होने के लिए बड़ी प्रतीक्षा करनी पड़ी। सत्ता, राष्ट्रहित पर भारी पड़ने लगी, बेरोजगारी बढ़ने लगी। रोजगार की तलाश में लोग गाँवों को छोड़ शहरों की ओर पलायन करने लगे। सरकार जनता को सुविधा मुहैया कराने में अक्षम साबित हो रही थी। फलतः आजादी से मोहभंग होना लाजिमी था।

आजादी के बाद हिन्दी कथा-साहित्य में ढेरों आंदोलन उठ खड़े हुए । विशेषकर यह कहानी के क्षेत्र में घटित हुआ। नये 'मैटेरियल' के साथ अनेक कहानी-आंदोलनों का सिलसिला चल पड़ा। चूंकि शोधार्थी का शोध-विषय साठोत्तरी कथा-साहित्य से संबंध रखता है, इसलिए उसकी पृष्ठभूमि 'नई कहानी' से अपनी बात को शुरू करना बहुत ही आवश्यक जान पड़ता है। सन् 1951-52 ई. से 'नई कहानी' का दौर चला जो लगभग एक दशक तक चलकर सन् 1959 ई. तक आते-आते कमजोर पड़ने लग जाता है और इसकी

शाखाएँ विभिन्न आंदोलनों के माध्यम से आगे बढ़ने लगती है। कथाकार काशीनाथ सिंह का पदार्पण इसी दौर में एक कहानीकार के तौर पर होता है।

शोधार्थी ने अपने शोध-कार्य में काशीनाथ सिंह की कहानियों के साथ उपन्यासों को भी शोध-कार्य हेतु प्रयोजनीय माना है, अतः इस शोध-प्रबंध को छः अध्यायों में बाँट कर शोध-कार्य को संपन्न करने की चेष्टा की गई है।

इस शोध-कार्य का **प्रथम अध्याय** है- ***'काशीनाथ सिंह: व्यक्ति और साहित्यकार'***। उक्त अध्याय में काशीनाथ सिंह की जीवनरेखा, उनका परिवेश, उस परिवेश का उन पर पड़ा प्रभाव, उनके अंतर्जगत का कैनवास, उनके साहित्यकार का विकास एवं उन पर पड़े विचारधारात्मक प्रभाव को समझने का प्रयास किया गया है।

इस शोध-कार्य का **द्वितीय अध्याय** है- ***'समाज, साहित्य, यथार्थ और सामाजिक यथार्थ'***। इस अध्याय में समाज की परिभाषा के साथ समाज के विभिन्न अंगों को खंगाला गया है जिसमें व्यक्ति, परिवार, आस-पड़ोस, जाति, संप्रदाय के साथ-साथ उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक पक्षों को वर्ण और वर्ग के माध्यम से समझने की चेष्टा की गई है। इस अध्याय में साहित्य और साहित्य के अंगोपांग पर भी दृष्टिपात किया गया है, जिसमें साहित्य की उपयोगिता के साथ-साथ उसकी उपादेयता पर भी बात की गई है। यथार्थ की परिभाषा के साथ यथार्थ के विभिन्न रूपों को

इस अध्याय में स्थान दिया गया है तथा साहित्य के क्षेत्र में यथार्थ तथा उसके विविध चेहरों का अन्तर्संबंध दर्शाया गया है।

इस शोध-कार्य का **तृतीय अध्याय** है- ***'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा-साहित्य के विविध आंदोलनों के सामाजिक सरोकार और कथाकार काशीनाथ सिंह'***। उक्त अध्याय में नई कहानी, साठोत्तरी कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी, सक्रिय कहानी तथा समकालीन कहानी में समाज के विविध चेहरों की खोज की गई है। इसमें साठोत्तर हिंदी उपन्यास की विविध प्रवृत्तियों को भी समझने की चेष्टा की गई है। यहाँ हिंदी कथा-साहित्य की इन स्थितियों के बीच काशीनाथ सिंह के कथाकार की अवस्थिति को समझने का प्रयास किया गया है।

इस शोध-कार्य का चतुर्थ अध्याय है- ***'काशीनाथ सिंह के कथा-साहित्य में सामाजिक यथार्थ का स्वरूप'***। उक्त अध्याय में मध्यवर्गीय नीतियों और इस वर्ग के छद्म, निम्नवर्गीय जीवन की विडंबनाएं, मानवीय संवेदनाओं का क्षरण, टूटते हुए मानव-संबंधों का सच, प्रेम का बदलता चेहरा, स्त्री-पुरुष संबंधों का बदलता चरित्र, बेरोजगारी, अकेलापन, स्त्री समस्या, पूंजी और बाजार का बढ़ता कद, दलित समस्या, व्यक्ति का प्रकृति से विलगाव, सामाजिक असमानता, राजनीति का गंदा चरित्र, धर्म का खोखलापन और पूंजी के साथ उसका संबंध तथा युवा वर्ग की समस्याओं आदि बिंदुओं पर

काशीनाथ सिंह के उपन्यासों एवं उनकी कहानियों में सामाजिक यथार्थ की पड़ताल की गई है।

इस शोध-कार्य का **पंचम अध्याय** है- ***'कथाकार काशीनाथ सिंह के पात्रों का सामाजिक यथार्थ के आईने में वर्गगत अध्ययन'***। उक्त अध्याय में कथाकार काशीनाथ सिंह के पात्रों के समाज को समझने की चेष्टा की गई है। इसमें अध्ययन की सुविधा हेतु उनके पात्रों का लैंगिक, धार्मिक, आर्थिक, भाषायी, परिवेशगत एवं राजनीतिक विचारधारा आदि स्तरों पर वर्गीकरण किया गया है। इसके अलावा इन पात्रों के नामकरण को भी समाजशास्त्रीय दृष्टि से समझने की चेष्टा की गई है।

इस शोध-कार्य का **षष्ठ अध्याय** है- '***व्यंग्य और भाषा के बरअक्स सामाजिक यथार्थ के संदर्भ में कथाकार काशीनाथ सिंह का कथा-साहित्य***'। उक्त अध्याय में व्यंग्य की अवधारणा को स्पष्ट करने की चेष्टा की गई है एवं उसी के अनंतर व्यंग्य और भाषा के साथ सामाजिक यथार्थ के अंतर्संबंध को खंगाला गया है। इसके साथ ही यह भी देखने की चेष्टा की गई है कि काशीनाथ सिंह के कथा-साहित्य में व्यंग्य के होने के मानी क्या हैं। इस क्रम में उनकी भाषा के भी चरित्र एवं उसके (भाषा के) व्यवहार को समझने की चेष्टा की गई है।

इस शोध-कार्य को संपन्न कराने में मेरे परिजनों, खासकर मेरे दोनों बड़े भाइयों का अहम योगदान रहा है। उन्होंने सदा मेरे मनोबल को सुदृढ़ बनाए रखा। इसके साथ ही इस कार्य को संपन्न करने में मेरे गुरुजनों विशेषकर प्रो. मनीषा झा एवं सहायक आचार्य श्री मनोज विश्वकर्मा तथा मित्र चतुरानन झा ने जो मेरी मदद की, उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित कर पाना मेरे बस की बात नहीं। इसके अलावा मैं अपने माता-पिता और अन्य मित्रों का भी सदा ऋणी हूँ। आभारी उन सब लोगों के प्रति भी हूँ, जिनकी इस शोध-कार्य को गति प्रदान करने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से किसी भी प्रकार की भूमिका रही है।

सर्वशेष में अपने गुरुवर डॉ. सुनील कुमार द्विवेदी के प्रति आभार की औपचारिकता पूरी करना चाहूँगा, क्योंकि उनका योगदान इस कार्य के संपन्न होने में सर्वाधिक है। यहाँ यह बात मैं ज़ोर देकर कहना चाहता हूँ कि शोध-सामग्री को जुटा पाना कितना कठिन कार्य है, इससे तो हर शोधार्थी यदा-कदा परिचित होता ही है। परंतु इस कार्य को सहज कैसे बनाया जा सकता है, यह मेरे गुरुवर डॉ. सुनील कुमार द्विवेदी से बखूबी सीखा जा सकता है। जहाँ भी मेरे शोध-कार्य के लिए प्रयोजनीय सामग्री का पता चला, उन्होंने बड़ी सहजता से उपलब्ध करवाया। इसलिए उनका मैं सदा ऋणी रहूंगा। उनके बिना यह शोध-कार्य संपन्न कर पाना बहुत कठिन जान पड़ता था।

धन्यवाद के कुछ शब्दों से आप सबके स्नेह और शुभकामनाओं से तो उऋण नहीं हो सकता, किंतु अपने उद्‌गार तो व्यक्त किए ही जा सकते हैं।

हिंदी विभाग,
उत्तर बंग विश्वविद्यालय
राजा राममोहनपुर,
ज़िला - दार्जीलिंग, प. बंगाल

Santosh Kumar Gupta

(संतोष कुमार गुप्ता)

पंजीकरण संख्या: Ph.D/Hindi(OG)/3228/R-2017

दिनांक: 17/09/2018